B.Com. (Hons)
P3 - A/c & finance समूह
Paper - VI
Cost & Management Accounting.

Date - 24.07.2020.

प्रो० धनंजय कुमार
सहायक, प्राध्यापक,
वाणिज्य विभाग
V.S.J. महाविद्यालय
राजनगर (मधुबनी)

UNIT - II

TOPIC - RECONCILIATION OF COST AND FINANCIAL ACCOUNTS

सामान्यतः लागत लेखे तथा वित्तीय लेखे दोनों ही दोहरा लेखा प्रणाली के आधार पर तैयार किया गया प्रारंभिक लेखा द्वारा तैयार किया जाता है. फिर भी दोनों प्रकार के लेखों से प्राप्त निष्कर्ष हमेशा एक तरह का नहीं होता है. व्यवहार में, लागत लेखों द्वारा दिखाया गया लाभ वित्तीय लेखों द्वारा दिखाये गये लाभों के बराबर नहीं होता है. कभी-2 दोनों के लाभों में कम अंतर होता है तो कभी-2 भारी अंतर भी मिलता है. अतः दोनों प्रकार के लेखों द्वारा दिखाये गये लाभों का मिलान अथवा समाधान करना आवश्यक होता है. इस संबंध में—

W.W. Bigg का कहना है कि— "यद्यपि बहुत सी दशाओं में लागत लेखे और व्यापारिक लेखे पृथक्तया अलग-2 रखे जाते हैं फिर भी यह जरूरी है कि वे एक दूसरे से मिलान करने के योग्य बनाये जाएँ. यदि ऐसा करना संभव नहीं है तो लागत लेखों की शुद्धता पर बहुत कम विश्वास किया जा सकता है."

श्री श्रीमाली का कहना है कि— "दोनों वित्तीय लेखों एवं लागत लेखों के लिखने मात्र के स्रोत एक ही हो सकते हैं. अतः उनका समय-2 पर मिलान किया जाना

चाहिए जिससे कि मिलान करना आसान हो सके।

उपरोक्त वर्णनों से यह स्पष्ट होता है कि लागत लेखों एवं वित्तीय लेखों का समाधान बहुत ही आवश्यक है। अतः उन कारणों का अध्ययन अवश्य कर लेना चाहिए जो इन दोनों लेखों द्वारा दर्शाये गये परिणामों में अन्तर पैदा करते हैं।

इस प्रकार, लागत लेखों के लाभ का वित्तीय लेखों के लाभ से मिलान करने के लिए जो विवरण तैयार किया जाता है, उसे समाधान विवरण (Reconciliation Statement) कहा जाता है। समाधान विवरण एक निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु तैयार किया जाता है:—

(i) अन्तर के कारणों को स्पष्ट करना।

(ii) लागत लेखों की शुद्धता ज्ञात करना

(iii) लागत लेखों में कुशलता लाना।

लागत लेखों एवं वित्तीय लेखों के लाभों में अन्तर के कारण निम्नलिखित हैं:—

(1) <u>व्ययों में अन्तर</u>:— लागत लेखों में अनेक व्यय जैसे कारखाना उपरिव्यय, कार्यालय उपरिव्यय तथा विक्रय उपरिव्यय आदि केवल अनुमान के आधार पर लिये जाते हैं, जबकि वित्तीय लेखों में ये वास्तविक होते हैं।

(2) कुछ मदों का लागत लेखों में <u>सम्मिलित न होना</u>:— कुछ ऐसी मदें जो विशुद्ध रूप से वित्तीय प्रकृति की होती हैं, ऐसी मदों का लेखा केवल वित्तीय लेखों में किया जाता है, जबकि उन्हें लागत लेखों में नहीं दिखाया जाता है। क्योंकि उनका लागत लेखों से कोई सम्बन्ध नहीं होता। ये मदें निम्नलिखित हैं:—

(a) ख्याति, प्रारंभिक व्यय तथा अभिगोपन कमीशन अपलिखित करना।
(b) अंशों एवं ऋणपत्रों के निर्गमन पर व्यय।
(c) दान
(d) पूँजीगत व्यय एवं हानियाँ।
(e) पूँजी पर दिया गया ब्याज
(f) ऋणपत्रों पर ब्याज।
(g) लाभांश का भुगतान
(h) आयकर
(i) लाभ में से कोषों (Fund) का निर्माण
(j) विनियोग पर प्राप्त ब्याज
(k) अंश के हस्तांतरण पर प्राप्त शुल्क
(l) बैंक जमा पर प्राप्त ब्याज
(m) आकस्मिक आय।
(n) बोनस का भुगतान।

(3) स्टॉक के मूल्यांकन में भिन्नता :- सामान्यतया वित्तीय लेखों के अंतर्गत स्टॉक का मूल्यांकन लागत मूल्य तथा बाजार मूल्य जो दोनों में कम हो पर किया जाता है, जबकि लागत लेखों में लागत मूल्य पर किया जाता है।

(4) ह्रास अपलिखित करने की विधियों में अंतर :- वित्तीय लेखों में आयकर अधिनियम के अनुसार ह्रास की गणना की जाती है, जबकि लागत लेखों में संपत्ति के जीवन काल के आधार पर गणना की जाती है, परिणामतः लाभों में भिन्नता उत्पन्न हो जाती है।

—— ॥ ——

Scanned with CamScanner